RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 38 अंक 36 हल्द्वानी सम्वत् 2079 सोमवार 13 फरवरी 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिय,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

पंचायत चुनाव को लेकर बिछता जाल

लोकसभा चुनाव के लिये गश्त

हल्द्वानी, रुद्रपुर, काशीपुर नगर निगम के लिये चर्चा
गंगोलीहाट, बेरीनाग, डीडीहाट, बागेश्वर, कपकोट में सम्पर्क

रानीखेत, द्वाराहाट, कर्णप्रयाग, पौड़ी, पिथौरागढ़ में पार्टी की आश

कार्यालय प्रतिनिधि

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव और लोकसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक हलचल अन्दरखाने होने लगी है। समय कब बीता पता ही नहीं चलता है, यही अब होने वाला है। पंचायत चुनाव और लोकसभा चुनाव का समय आने वाला है। यही कारण है कि पंचायत चुनाव को लेकर जाल बिछने लगे हैं। प्रदेशभर में उन नेताओं के होर्डिंग दिखाई देने लगे हैं जो चुनाव तैयारी में हैं। हल्द्वानी, रुद्रपुर, काशीपुर जैसे नगर निगमों के लिये नामों की चर्चा हो रही है। राजनीतिक गलियारों में उन नामों की चर्चा हो रही है जो अध्यक्ष/मेयर पद के लिये ताकत दिखा सकते हैं। देहरादून, हरिद्वार की प्रमुख सीट के लिये भी बड़े नेताओं की पकड़ होने लगी है। हल्द्वानी सीट पर तो मेयर डॉ. जोगेन्द्र रौतेला के सामने कांग्रेस की ओर से कई नामों की सुनवाई हो रही है। पिथौरागढ़ नगर पालिका सीट के लिये घनघोर में जगत सिंह खाती और राजेन्द्र रावत के नाम की चर्चा है लेकिन अन्य नाम भी बताए जा रहे हैं। कर्णप्रयाग, पौड़ी में कांग्रेस-भाजपा की घमासान अभी से दिखाई दे रही है। रानीखेत और द्वाराहाट में पार्टी के बड़े नेताओं के इशारे पर टिकट मिलने की बात साफ हो चुकी है। गंगोलीहाट नगर पंचायत में तो कांग्रेस की ओर से नारायण सिंह बोहरा पूरी तैयारी में हैं। भाजपा की टीम चाहेगी चैयरमैन सीट पर उसका कब्जा बना रहे इसके लिये जोड़तोड़ अभी होनी है। बेरीनाग नगर पंचायत सीट पर चैयरमैन हेम पन्त अपने को दोहराने के लिये ताकत दिखाएंगे। इस सीट के लिये भाजपा की ओर से डी.एल.शाह पूरी तैयारी में दिखाई दे रहे हैं। अन्य नामों में जीवन सिंह रातव, निर्मला भैसोड़ा की चर्चा भी है। सामाजिक कार्यकर्ता पी.बी. बोरा हालांकि राजनीति से दूर हैं लेकिन वह भी अवसर बना सकते हैं। बागेश्वर नगर पालिका के चैयरमैन के लिये पुराने चेहरे निर्मला दफौटी, गीता रावल का नाम चर्चा में है लेकिन इस बार का चुनाव बहुत बदला हुआ होगा।

पंचायत चुनाव की गणित के अलावा लोकसभा चुनाव का जाल बुना रहा है। इसमें साफ दिखाई दे रहा है नैनीताल सीट पर सांसद अजय भट्ट, हरिद्वार सीट पर रमेश पोखरियाल निशंक तो होंगे ही, कांग्रेस से हरीश रावत भी हरिद्वार सीट से दांव चलेंगे। इन नेताओं की गश्त भी जारी है।

दसवीं पुण्यतिथि

स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती

(संस्थापक/सम्पादक पिघलता हिमालय)

21.5.1944 - 22.2.2013

आपकी दूरदृष्टि, आपके द्वारा किया गया चिन्तन-मनन व कार्य हमारे प्रेरणा श्रोत हैं। दसवीं पुण्यतिथि पर शत-शत नमन।

समस्त परिजन
एवं
पिघलता हिमालय परिवार

मंगलसिंह मर्तोलिया के स्वास्थ्य में अब सुधार

मुनस्यारी/हल्द्वानी। पिघलता हिमालय के संस्थापक मंगल सिंह मर्तोलिया के स्वास्थ्य में अब थोड़ा सुधार है। विगत दिवस उन्हें अचानक स्वास्थ्य बिगड़ने पर हल्द्वानी अस्पताल लाया गया। शरीर का एक हिस्सा शून्य होने पर उन्हें सघन चिकित्सा में रखा गया। पुत्र मनोज मर्तोलिया सहित ईष्ट-मित्र उनके साथ थे। स्थिति ज्यादा खराब देख उनके भतीजे वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. दिनेश सिंह मर्तोलिया उन्हें अपने साथ कानपुर ले गये। कन्जौन मेडिकल कालेज के प्राचार्य डॉ. दिनेश मर्तोलिया की देखरेख में श्री मंगल सिंह जी उपचार चल रहा है और वह काफी सुधार में हैं।

समाजसेवी व जन सरोकारों से जुड़े मंगल सिंह जी के स्वास्थ्य को लेकर तमाम लोगों ने जानकारी चाही है और उनके शीघ्र स्वास्थ्य होने की कामना की है। डॉ.दिनेश मर्तोलिया ने बताया है कि आवश्यक उपचार जारी है और वह सुधार में हैं।

बनभूलपुरा : निशाने पर
एक ओर रेलवे भूमि का सर्वे दूसरी ओर दबंगों पर नकेल

पि.हि. प्रतिनिधि

हल्द्वानी महानगर का बनभूलपुरा लगातार निशाने पर है। एक ओर रेलवे भूमि का सर्वे तो दूसरी ओर दबंगों पर नकेल कसने के लिये कार्रवाई हो रही है। असल में रेलवे की भूमि पर अतिक्रमण हटाने को लेकर जैसे ही उच्चन्यायालय ने सख्त आदेश दिये थे और प्रशासन ने तैयारी कर ली थी तो पूरे इलाके में हड़कम्प मच गया और हाहाकार के बीच सुप्रीम कोर्ट में मामला पहुँचा। सुप्रीम कोट से राहत मिली है लेकिन अतिक्रमण आज नहीं तो कल हटना ही होगा, ऐसे में समझदार रास्ता तलाशने लगे हैं। प्रशासन भी हरकत में है, जिस कारण रेलवे की जिस भूमि पर कब्जा है उसे देखा जा रहा है। साथ ही अपनी भूमि बताने वालों के दस्तावेजों के साथ मिलान किया जा रहा है ताकि स्थिति साफ हो सके। इस सर्वे के कारण भी हड़कम्प तो है ही। जाँच में रेलवे से भी दस्तावेज मांगे गये हैं।

प्रशासन की संयुक्त टीम दर्ज अभिलेखों के साथ इन्दिरानगर ठोकर से लेकर तमाम जगह सीमांकन कर चुकी है। रेलवे भूमि प्रकरण मामले में प्रशासन, राजस्व, वन, रेलवे और नगर निगम की टीम का संयुक्त सर्वे हो रहा है। डीजीपीएस (डिफरेंशियल ग्लोबल पोजिशनिंग) सिस्टम से यह सर्वे किया जा रहा है। बताया गया है कि इस प्रकार सर्वे होने से वन विभाग के पिलरों की सटीक जानकारी मिल जाएगी।

प्रशासन ने अपने सर्वे में यह जानने की कोशिश की है कि वन, रेलवे और राजस्व की सीमा कहाँ से शुरु हो रही है और किसके पास कितने हेक्टेयर जमीन है। एडीएम अशोक जोशी के नेतृत्व में टीम ने रेलवे स्टेशन की छत पर मशीन लगाकर अपने कार्य को अंजाम दिया। इसी प्रकार लाइन नम्बर आठ से भी सर्वे किया। अब सर्वे के आधार पर रिपोर्ट तैयार कर सौंपी जाएगी।

दूसरी ओर जिला विकास प्राधिकरण ने बनभूलपुरा के लाइन नम्बर 12 में नजूल भूमि पर अवैध निर्माणकर्ताओं को नोटिस जारी करने के साथ ही जिस प्रकार से ताबड़तोड़ कार्रवाई की उससे हलचल है। इस कार्रवाई में दर्जनभर अवैध निर्माण सील कर दिये गये और एक बगीचे में नजूल भूमि पर हो रहे अवैध निर्माण पर बुलडोजर चलाया गया। प्रशासन ने चेतावनी दी कि नजूल भूमि पर फ्रीहोल्ड व नक्शा पास कराए बिना निर्माण किया तो कानूनी कार्रवाई की जाएगी। कमिश्नर सहित पूरे अमले के पहुँचने पर भी बनभूलपुरा पहले तो कोई असर नहीं हुआ और अतिक्रमण कारियों के मन शायद रहा हो

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

संयम और सुलझाव ही नेक रास्ता

विगत दिनों हल्द्वानी शहर के एमबीपीजी कालेज में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के जिला सम्मेलन से पहले कालेज में मचा बबाल कई सवाल छोड़ गया है। आंखिर ऐसी स्थिति आने ही क्यों दी जाए कि आपसी द्वेष हो और अपनी जिदों में हम खामखां लड़ते-भिड़ते रहें। इससे महाविद्यालय के असल कार्य प्रभावित होते हैं। इस अशान्ति में बहुत नुकसान भी होता है जो प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देता।

असल बात यह है कि एमबीपीजी कालेज उत्तराखण्ड की बड़ी छात्र संख्या वाला कालेज है और राजनीतिक पार्टियों को शुरु से यह भ्रम रहा है कि इसमें अपना रंग जमा लेने से प्रदेश की राजनीति में उन्हें लाभ होने जा रहा है। जबकि वास्तविकता यह है कि गिनती भर के दो-चार नेता अपना रास्ता बना पाते हैं और किसी बड़े नेता से जुड़ते रहे हैं जबकि सारी भीड़ एक ओर रहती है। खैर, राजनीति के अखाड़ों में अलग प्रकार का चिन्तन होता रहता है और चाहे कोई पार्टी हो वह छात्रों को अपनी ओर मिलाने के लिये प्रयास करती रहती है।

एमबी कालेज में अभाविप अपना जिला सम्मेलन करवाने और छात्र संघ अध्यक्ष इसके विरोध में थे तो महाविद्यालय प्रशासन के लिये दुविधा की स्थिति थी। सारा खेल छात्र-छात्राओं को समेटने का है। ऐसे में अभाविप और छात्र संघ की तनातनी के बाद तय किया गया कि सम्मेलन वाले दिन कालेज में अवकाश रहेगा और संगठन अपना सम्मेलन करता रहे। अब बात आती है कि आंखिर इतना बबाल क्यों? पढ़े-लिखे छात्र-छात्राओं को विचार करना चाहिये कि जो बात वह बैठकर कर सकते थे उसके लिये दोनों पक्ष गुस्से से भरे रहे। सम्मेलन कराने वालों को छात्र संघ को विश्वास में लेना ही चाहिये और छात्र संघ ने भी त्याग की भावना दिखानी जरूरी है। छात्र जीवन में उतावलापन हो सकता है परन्तु ध्यान रहे संयम और सुलझाव ही नेक रास्ता है। इस उम्र में पूरा ध्यान अपने पठन-पाठन, अपने विकास के लिये हो न कि नारेबाजी, नेतागर्दी, पिछलग्गू बनने पर।

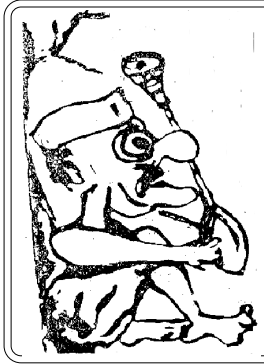

फसक

दाज्यू, कर्म और दुष्कर्म दोनों ही हो रहे ठैरे

अब चुनाव से पहले चेपाचेप हो रही है बल

दाज्यू, फागुन मस्त महीना सामने खड़ा है क्या कहें, क्या न कहें? कर्म और दुष्कर्म दोनों ही हो रहे ठैरे। आशाबापू यानी आशाराम दुष्कर्म के मामले में दोषी होते जा रहे हैं। दाज्यू, आप जानने ही वाले ठैरे कि कर्मवीर, धर्मवीर, शर्मवीर, नर्मवीर कई प्रकार होने वाले हुए। मायके गई महिला अपने प्रेमी संग होटल में पति ने पकड़ ली बल। दाज्यू, हर विषय के लिपटन-किपटन होने वाले ठैरे। काशीपुर में ससुरालियों ने दामाद और उसके पिता पर जानलेवा हमला कर दिया। दाज्यू, अब पुराना जमाना तो रहा नहीं जो सुन ले, सह ले, संभाल ले। हाथोंहाथ निपटाने के चक्कर में सब हथगोले बने हुए हैं।

अब चुनाव से पहले चेपाचेप हो रही है बल। पार्टियों ने अपने संगठन मजबूत करने के लिये रास्ते खोल दिये हैं। लगुवा भगुवा स्यार-फ्यार में लगे हैं। गोवर को गणेश और गणेश को गोवर कहने वाले भी दुनिया में कम नहीं हैं। किस-किस को समझाते रहो।

उत्तराखण्ड लोकसेवा आयोग ने 33 विषय विशेषज्ञों को हटाया है। बहुत सख्ती के बाद भी घपले होने पर यह तो होना ही था। हरिद्वार में बैरागी कैम्प में सिंचाई विभाग की जमीन से अतिक्रमण हटाने गई टीम को विरोध झेलना पड़ा। कुम्भ में अस्थायी निर्माण के लिये दी गई जमीन पर कुछ ने तारबाड़ कर डाली है। पिथौरागढ़ में हवाई पट्टी के निकट बीयर बार की स्वीकृति से ग्रामीण भड़क चुके हैं और प्रदर्शन भी किया। दाज्यू, बीयर बार का लाइसेंस भी तो हर कोई नहीं ले सकता है, प्रदर्शन करने वालों को क्या पता।

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के परीक्षाफल का सिस्टम गड़बड़ाया चुका है। दाज्यू, हार्डवेयर-सॉफ्टवेयर होने वाला ठैरा। पता नहीं क्या-क्या होता होगा। बच्चों ने तो बौयाट करना ही हुआ, उनका परीक्षाफल का मामला है। दाज्यू, हम तो कह रहे हैं हाईस्कूल-इण्टर बोर्ड की तरह डिग्री कालेज वालों की परीक्षा व्यवस्था होनी चाहिये ताकि पटरी पर व्यवस्था हो। ये सेमेस्टर के नाम पर घ्वेड़ाघ्वेड़ कब तक चलती रहेगी?

अल्मोड़ा दुग्ध संघ की 15 सदस्यीय प्रबन्ध समिति को वित्तीय अनियमितता के आरोप में निलम्बित किया गया है। अब तीन सदस्यीय टीम जाँच करेगी बल। पिथौरागढ़ नैनीसैनी हवाईपट्टी में विमान सेवा शुरु न होने पर उक्रांद ने कागज के जहाज उडाकर प्रदर्शन किया। दाज्यू, बचपन के खेल का मजा और ही होने वाला हुआ। क्या करें खेलमाल होते रहने चाहिये।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

अब कितनी दरारें, कितना मुआवजा और सिसकियाँ?

देवकृष्ण थपलियाल

श्री दलीप सिंह कुंवर सिंहधार, जोशीमठ के वाशिंदे हैं, अपने ही मकान पर एक छोटी सी दुकान चलातें हैं, भारी बारीश और ठण्ड के बावजूद वे बाहर सड़क पर ही मिल गये, सरकारी मुलाजिम समझ उनकी आँखों में थोड़ी उम्मीद व दर्द छलक पडा। बीते छः-सात साल पहले मेहनत-मजदूरी के दम पर बने अपने मकान का कोना-कोना दिखाने लगे, मकान में हर तरु छोटी-बड़ी दरारें और पानी का रिसाव साफ दिखा, मकान की स्थिति अमूमन खतरे के ही करीब है, तो सरकारी सहायता के बारे में जानना चाहा, तो उनका जबाव था सरकार कहती है कि 'समय रहते मकान को खाली कर दो,' लेकिन वे कहते हैं जाएं पर जाएं कहाँ?

ऐसी ही स्थिति 'राहत कैम्प' बनाये गये वेद-वेदांग संस्कृत महाविद्यालय जोशीमठ में रह रहे पच्चीस परिवारों के कुछ लोगों ने भी बयाँ की, सरकार के तत्कालिक इन्तजामों से वे कुछ सन्तुष्ट जरूर दिखे परन्तु भविरूय को लेकर उनके माथे पर चिन्ता लकीरें साफ दिखी।

एसएसबी की नौकरी से रिटायर्ड हो चुके एक बूजुंग सज्जन ने कहा कि फिलहाल जब तक आपदा का जोर है, तब तक तो सरकार खड़ी रहेगी या हमारी जाँच-पूछ करती रहेगी, पर आगे का क्या होगा? यह सोचकर वे चिन्ता में डूब जाते हैं ।

सीमान्त जनपद चमोली का जोशीमठ नगर विगत 02 जनवरी से 25 फीसदी हिस्से के भवनों में जिस तरह की दरारें आई हैं, उससे लोग खासे परेशान हैं, आसन्न खतरे को भाँपते हुए लोगों को अपने घरों को छोड़ कर राहत शिविरों या अन्य स्थानों पर शरण लेने को मजबूर होना पड़ा। इसी बीच बारिश, बर्फवारी और ठण्ड के चलते भी अनेक परेशानियां साथ आ गई हैं, बच्चों और बुजूर्गों व बीमार लोंगों को इस आपदा में खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है, अब तक मिली सूचनाओं के आधार पर 723 मकानों/घरों में अभी तक दरारें आ चुकी हैं, जिनमें 283 परिवार अपनें आवासों छोड़कर विस्थापित हो चुके हैं इनमें 60 परिवार स्वयं ही विस्थापित हुए हैं, इसके अलावा 140 भवनों पर लाल निशान लगा कर खतरे की ओर इशारा किया गया है। लोगों को ठहराने के लिए कई सरकारी संस्थानों खासकर विद्यालयों व निजी व्यावसायिक संस्थानों को राहत शिविर में तब्दील कर दिया गया है, जिस से नौंनीहालों की पढ़ाई में भी व्यवधान पहुँचा है, अभी तक ऐसे 1106 कमरे चिन्हित हैं जहाँ लोगों और परिवारों को ठहराया गया है। सरकार भी यथासम्भव लोगों के साथ खड़ी दिख रही है। 73 परिवारों को 5-5 हजार रूपये की राशि तत्काल दे दीं गईं हैं, 10 प्रभावित परिवारों को क्षतिग्रस्त भवन के बदले 1.30 रूपये, 03 प्रभावित परिवारों को किराये पर रहनें के लिए 4-4 हजार रूपये तत्काल मुहैया करा दिए गये हैं, 125 प्रभावित परिवारों को सामान ढुलाई और शिफ्ट के लिए 50-50 हजार रूपये तथा आपदा और ठण्ड से अस्वस्थ्य हुए 295 लोगों का अभी तक स्वास्थ्य परीक्षण करा कर उन्हें उचित इलाज व दवा प्रदान की गई हैं। सूबे के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सहित अनेक वरिष्ठ कैबिनैट मंत्री, विधायक, पक्ष-विपक्ष के सभी सियासी दलों के नेताओं शासन-प्रशासन के सभी उच्चाधिकारियों ने जोशीमठ पहुँचकर इस आपदा में यथासंभव सहयोग कार्य का आश्वासन दिया है। मुख्यमंत्री स्वयं दो से तीन बार जनता के बीच पहुँचे चुके हैं, जिससे आपदा राहत कार्यों में सहयोग मिला हैं बल्कि जनता के मनोबल को बढ़ाया है। अचानक आई प्राकृतिक आपदा से जोशीमठ नगर के में लोग अत्यन्त भयभीत और तनाव में हैं, आपदाग्रस्त नगर क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन भू-धंसाव का दायरा और प्रभाव निरन्तर बढ़ रहा है। बदरीनाथ हाईवे पर कुछ दिन पहले भरी गईं दरारें भूमि धंसने से और चौड़ी हो कर फिर उभर आईं हैं, औली रोपवे के टावरों के आसपास भी दरारें निरन्तर बढ़ रहीं हैं। हाईवे पर स्थित दो और होटल 'स्नोकृष्ट' व 'कामेट' भू-धंसाव के कारण झुक गये हैं। आसपास बने चार-चार मंजिले ये होटल विघटित किये जा रहे हैं। भू-धंसाव के दंश के अलावा जल प्रवाह में अत्यधिक वृद्धि से जनजीवन काफी अस्त-व्यस्त है, जोशीमठ शहर की जेपी कालोनी में फूटी जलधारा से पानीं का प्रवाह तेज हो रहा है। इस धारा प्रवाह में 24 घंटे पहले प्रवाह 190 एलपीएम लीटर पर मिनट था जो अब बढ़कर 240 एलपीएम पहुँच गया है। जोशीमठ शहर के निचले हिस्से में मुख्य बाजार से लगभग नौ किलोमीटर की दूरी पर मारवाड़ी में स्थित है जेपी कालोनी। इसी कालोनी में दो जनवरी को अचानक जलधारा फूटी थी। इससे निरन्तर मटमैला पानी बह रहा है। अधिकांश लोग जोशीमठ में आई इस त्रासदी के लिए इसी जल धारा को ही जिम्मेदार मानते हैं। काफी लोगों और परिवारों के व्यवसायों में इस आपदा से काफी नुकसान पहुँचा है, वे लोग भी अब अनिश्चय की स्थिति में हैं, की करें तो करें क्या? अगर सरकार उन्हें कुछ मुआवजा या सहयोग देती भी हैं, तो भी वे अपने भविष्य को लेकर डरे-सहमे व भयभीत हैं। पिछले कई दिनों से आपदा से ज्यादा क्षतिग्रस्त हुए होटलों व अन्य बड़े-छोटे व्यावसायिक प्रतिष्ठानों व घरों को ध्वस्तीकरण का काम बड़ी तेजी से चल रहा है, हालाँकि भवनों को तोडने के काम बाधाएं आ रहीं हैं, लोगों का कहना है, कि जब तक उन्हें उचित मुआवजा नहीं मिल जाता वे भवनों को ध्वस्तीकरण नहीं होने देंगे। नगर के अन्य भवन भी लगातार क्षतिग्रस्त होते चले जा रहे हैं, कई होटलों को तोड़ने का काम जारी है। लोगों में असन्तोष इस बात को लेकर भी है कि उनकी रोजी-रोटी भी इस आपदा की भेंट चढ़ गई। कई लोगों के होटल बन्द हो गये तो कई व्यापारियों का व्यापार व कारोबार इस आपदा कारण से टूट गया है, जोशीमठ के कई व्यापारियों का कहना है कि उन्होंने बैंक से लोन लिया था अब किश्तें कैसे चुकाएं? इसके अलावा छोटे व्यापारी, रेहड़ी-पटरी, ठेली, खोखा ढाबा चलाने वाले ज्यादातर लोग जोशीमठ में किराये में रहते हैं, उनके सामने ज्यादा संकट हैं। रूद्रप्रयाग जिले के निवासी दुर्गा सिंह रावत सात साल पहले यहाँ आये थे, बदरीनाथ मुख्य मार्ग पर टीसीपी बाजार में किराये पर ढाबा लिया और कामधंधा जमाया लेकिन अब स्थिति बुरी हो गई है। सूरज नें नगर में होटल व्यवसाय की आमद को देखते हुए लॉन्ड्री 'कपड़े धुलाई की' का स्टार्टअप शुरू किया। 20 लाख की आधुनिक मशीन लगाए। सेटअप पर 35 लाख लगाई,आज उस भवन पर दरारें आ चुकी हैं और एक रुपया भी नहीं कमाया। कई लोगों नें होटल लीज पर लिए थे, उन्हें भी बैरंग वापस लौटना पड़ा है। राहत शिविर में रह रहा हर परिवार अजीब मनोदशा से गुजर रहा है, तन शिविर में है, मन दरकते हुए घरों/मकानों में हैं, हर पल शहर दरक रहा है, और इसी के साथ टूट रही है, उम्मीदें। मनो-मस्तिष्क में एक चक्रवात सा उठा रहा है। कहाँ जाएंगे, कैसे रहे क्या दोबारा छत नसीब हो पाएगी, बच्चों की पढ़ाई क्या होगा मवेशियों को कहाँ ले जायेंगें । इसी उधेड़बुन में लोगों की भूख-नींद भी कोसों दूर चली गई है। हालाता ऐसे मोड़ पर ले आए हैं जहाँ से अन्धेरे के सिवा और कुछ नजर नहीं आ रहा है। राज्य में प्राकृतिक आपदाओं का आना कोई नई बात नहीं है, दुर्भाग्य से इस पहाड़ी राज्य ने अतीत में कई दैवीय व प्राकृतिक आपदाएं-झेली हैं इतिहास इस बात का गवाह है कि अनेक प्राकृतिक त्रासदियों ने बड़ी मात्रा में मानवीय तबाही देखी है। परन्तु राज्य निर्माण के बाद साल-दर-साल घट रही इन घटनाओं से सरकार और नीति-नियन्ताओं पर प्रश्न चिन्ह खड़ा होना स्वाभाविक है ।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नवीन जोशी के उपन्यास पर चर्चा- २

देवभूमि डिवेलपर्ड : विकास की गति धीमी करने की अनुसंसा करता है

डॉ.प्रयाग जोशी

विवेचित किताब नौ परिच्छेदों में है। प्रारम्भिक परिच्छेदों के शीर्षक, वहाँ के जनान्दोलनों अथवा उनमें बरते गए नारों के नाम हैं। गाँवों के विस्थापन से बंजर हुए घरों के, बहने से रोक दी गई नदियों के, बांधों के शैलाबों में डुबा दी गई जन आकांक्षाओं को, राजधानी लखनऊ के पंजों से एक राज्य को जिन्दा छुड़ा कर ले जाने की जुत्थम-जुत्था और शान्ति के लिए धधकते हिमालय के नाम से भी शीर्षक हैं।

छठे परिच्छेद में आते है। 'डेवलपर्स' देवभूमि पे। उनके कारखाने लगाने के लिए रिआयती दामों पर भूखण्डों की खरीद, होटल, रिसोर्ट और अपार्टमेण्ट बनाकर पर्यटकों के ठहरने के ठौर विकसित किये रहने को फटाफट पास हुई बहुत सी योजनाएं पिछले दो दसकों में पूरी हो गई हैं। जिससे वहाँ की ट्रिकल डाउन इकोनॉमी की आधारभूत नींव पुख्ता कर ली गई है, ऐसा मान लिया गया है। यह इकोनामी समन्न वर्ग के निवेशकों की खुशहाली के ग्राफ को काफी ऊपर पहुँचाने में सफल हुई है। ऊपर से बूंद-बूंद चू कर गिरा हुआ उसका रस नीचे ही आ रहा है। पहाड़ की चोटियों पर नहीं जा रहा तो किस विधि से पहुँचाया जाय इसकी जद्दो-जहद चल रही है। जो लोग ऊपर को ले जाने वाली सीढ़ी के पहले पायदान पर पैर रखने की जगह पाने के लाइन में खड़े हैं, औपन्यासिक समय-खण्ड में उनके पास 'नेचर हट्स' और 'होम-स्टे' आवासों के चज प्राजेक्ट हाथ में हैं जिन्हें धरातल पर उतारने के लिये उन्हें ऐसे भू-खण्डों की तलाश है जो बांज-बुरांश, काफल-कटोंज जैसे सदा हरित वनों के आच्छादनों से ओझल हों। हिमालय सामने दिखते हों। जाड़ों में बर्फ और गरमियों में शीतल हवा के झोंके चलते हों। नजदीक गाँव हो। भूखण्ड, पहाड़ों के माथों की तरह आयत्त पहाड़ियों पर हों। तीखे तीखे ढंगारों पर न हो। उनकी खोज में वे कुमाऊँ के सीमान्तों की तरफ निकले हुए हैं। कथा की बीज वस्तु की संकल्पना में समाल गाँव उपन्यास के नायक (छाया चरित्र) पुष्कर का दीदी की ससुराल और सुमकोट उसका खुद का मूल गाँव है। ऐसे स्थानों में उनके संज्ञान में समाला और सिमल्ता गाँव लाये गए हैं।

सिमाली तीखी पहाड़ी पर बसा है। वहाँ जाने के लिए अल्मोड़ा से दन्या होकर पिथौरागढ़ जाने वाली सड़क पर घाट से पहले बाकुड़ के पास उतर जाना पड़ता है। उसके बाद पैदल रास्ता है, असिंचित गाँव है। हिमालय नहीं दिखता। पैताने गहरी दरी में नदी बहती है। उस पार वैसी ही दूसरी खडी पहाड़ी सामने आ जाती है। आबादी तीसेक परिवारों की है। वहाँ लोग मोटा अनाज अनाज मडुवा झंगोरा और भट-गहत उगाते हैं। तिल भंगीता और भांग जैसी दलहनी-तिलहनी जैसी चीजें भी भी उगाते हैं जो मशालों, चटनियों और खाजाओं में मिलाकर भी चबाई जाती है। रायता-खटाई-अचारों में इनकी मांग होती है। हर परिवार में गायें और दो-चार बकरियाँ हैं। कुछ लोग साठ डिग्री की सीधी ढलान पर उतर कर सड़क के किनारे खुली चाय की दुकानों में दूध बेचने जाते हैं। व्यवसाय के नाम पर तो इतना ही है पर वे खाली बैठे नहीं रहते। उन्हें सरकारी इमदाद भी मिलती रही है। उनका सरकार पर भरोसा है कि कुछ दिन लगेंगे पर हालत सुधरेगी। गाँव में कन्ट्रोल की दूकान है। मनरेगा में रोजगार है। गधेरे में डिग्गी बन रही है। पूरी हो जाएगी तो 'हर घर जल' योजना में उन्हें भी पानी मिल जाएगा। सीधी खड़ी चढ़ाई में खड़ंजे बिछ रहे हैं। बिजली के खम्बे गढ़ रहे हैं। मोबाइल टावर बिछ रहे हैं। ऐसी योजनाओं में उन्हें भी मजूरी मिल जाती रही हैं। इण्टर बीए पढ़ने दूर-दूर जाना पड़ता है फिर भी लड़के पढ़ रहे हैं। ठीक-ठाक कद काठी और मेहनती लड़के फौज में भी जा रहे हैं। मुश्किलें हैं पर अन्यथा विकल्पों की सृष्टि हो रही है। एक स्मि से यह भी डवलपमेण्ट की ही प्रोसेस है। पर यह डिवलपर्स की प्राथमिकता नहीं हो सकती। वे इन्वेस्ट करके फटाफट प्रोफिट चाहते हैं। इस लिए वे सिमल्ता की ओर देखने निकलते हैं। उन्हें बताया गया है, वहाँ के भूखण्डों तक पहुँचने अल्मोड़ा से सेराघाट होकर गंगोली गणाई निकलने वाली सड़क पर सिमल्ता में मोटर से उतरना पड़ता है। उसके बाद कम ढलान वाली चढ़ाई-उतराई में पैदल ही चलना होता है। खड़िया की खुदान वाली जगहों को सभी जानते हैं। वहाँ जंगल के बीच भूमि देखने कुमाऊँ के बिल्डर शाह साहब चढ्ढा ग्रुप के प्रतिनिधि को साथ लेकर जाते हैं। उन्हें मल्ला सेरा में जमीन मिल जाती है तो खरीदने में देर नहीं करते। क्रमशः

ज्योतिष की बातें - 114

13 फरवरी 2023 को सूर्य शत्रुराशि कुम्भ में प्रवेश करेगा। वहाँ पर शनि भी विद्यमान होगा इसलिए सूर्य अत्यधिक निर्बल रहेगा। सूर्य केवल 3, 6, 10 व 11 वें स्थान पर शुभ फल प्रदान करता है। अतः अगले एक माह सूर्य आरोग्य, आत्मबल, सफलता आदि अपने कारक विषयों में अल्प मात्रा में शुभ फल प्रदान कर सकता है। अन्य राशि के जातकों को अभी धैर्य रखना चाहिए।

15 फरवरी 2023 को शुक्र मीन राशि में प्रवेश करेगा। वहाँ पर शुभग्रह गुरु भी साथ में होगा इसलिए शुक्र शुभ फलदायक रहेगा। अतः अगले 26 दिन शुक्र भोगविलास आदि अपने कारक विषयों में मेष, वृषभ, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ व मीन राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। महाशिवरात्रि व्रत- फाल्गुन कृष्णपक्ष चतुर्दशी निशीथ व्यापिनी तिथि में महाशिवरात्रि व्रत किया जाता है। अतः शनिवार 18 फरवरी 2023 को महाशिवरात्रि व्रत रखकर रात्रि के चारों प्रहर में शिवपूजा की जाएगी। महाशिवरात्रि का यह व्रत रखने से वर्ष भर की बारहों शिव चतुर्दशी का व्रत रखने का पुण्य प्राप्त हो जाता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 5

वृद्धाश्रम अथवा वानप्रस्थाश्रम

आजकल यह समाचार प्रायः सुनने को मिलते हैं कि बेटे ने माता पिता को घर से बाहर निकाल दिया, भोजन करने को नहीं देते हैं, वृद्धाश्रम में भर्ती करा दिया। बहुत ही मार्मिक रूप से बुजुर्गों की बातें प्रकाशित की जाती है। इसमें एक पक्षीय विचार होता है। कोई भी बेटा अपने माता पिता को वृद्धाश्रम नहीं भेजना चाहता, वह मजबूर होकर ऐसा करता है।

पहला कारण तो यह है कि माता-पिता ने कभी अपने बच्चों को लाड़ प्यार नहीं दिया । पैदा होते ही आया को सौंप दिया, थोड़ा बड़ा हुआ तो बोर्डिंग स्कूल में भेज दिया और बड़ा हुआ तो उसे कमाने के लिए घर से दूर विदेश भेज दिया। जिससे बच्चों में स्वार्थ ही पैदा हुआ, माता पिता के प्रति संस्कार पैदा नहीं हो सके ।

दूसरा कारण आजकल बुजुर्गों में माया मोह बहुत बढ़ गया है। वे अपने बहू बेटे की दैनिक जीवन में अत्यधिक हस्तक्षेप करने लगे हैं उनकी शारीरिक गतिविधियों पर भी अंकुश लगाते हैं । इतना खर्च क्यों कर दिया? कहाँ चले गए थे? बिजली का बिल क्यों नहीं भरा अभी तक? आदि आदि बातों से परेशान करते रहते हैं। आखिर हारथक कर बुजुर्ग माता-पिता को वृद्धाश्रम में भेजना पड़ता है या फिर बहू-बेटे स्वयं ही घर छोड़ कर चले जाते हैं ।

भारतीय शास्त्रों में इस समस्या का स्पष्ट समाधान बताया गया है। जीवन की तीसरी अवस्था में व्यक्ति को वानप्रस्थी हो जाना चाहिए, यहाँ पर वानप्रस्थ से तात्पर्य गृह त्याग से नहीं बल्कि मोह त्याग से है। साथ ही पुत्र के लिए माता पिता सदैव पूजनीय होते हैं। वे अच्छे हों या बुरे क्योंकि माता-पिता जन्म देने मात्र से ही पूजनीय हो जाते हैं उनमें किन्हीं गुणों की अपेक्षा नहीं होती ।

-सरल

जनमबार बटी हैप्पी बड्डे तक

दीवान सिंह कठायत

'मम्मी मैं एक फूंक में ही सब को बुझा दूंगा तुम देखना', कहते हुए अपने जन्म दिन के अवसर पर, सजाए गए ड्राइंग रूम में टेबल पर रखे हुए केक पर जगमगा रही छोटी मोमबत्तियों की ओर इशारा कर, नन्हे नीलेश ने उत्सुकता व रोमांच मिश्रित स्वर में अपनी माँ को झकझोरते हुए सा कहा। 'नहीं-नहीं सब मत बुझाना, एक को बचा देना' नीलेश के गालों को सहलाते हुए माँ ने उसे समझाया। गाँव के सभी बच्चे व उनके साथ आये सयाने कमरे में आ चुके थे। परुली आमा जो अब अकेली अपने घर में रह रही थी, टेबल के निकट ही कुर्सी में बैठकर केक पर आँखें गढ़ाए हुई थी। उसके नाती-पोते अपने माता-पिता के साथ हल्द्वानी में रहकर पढाई कर रहे थे। गाँव में जो भी आयोजन होता उस सब में उसे ही भागीदारी करनी होती अपने बच्चों के नाम से। अन्यथा गाँव वाले नाराज हो जाएंगे, भाई-बिरादरी निभानी ठहरी उसे।

अब हैप्पी बर्थडे की आवाज सुनाई देने लगी। नन्हा नीलेश गालों को फुलाते आँखों को तरेरते हुए जल रही बत्तियों को बुझाने के इशारे की प्रतीक्षा करने लगा. माता-पिता का इशारा मिलते ही जोर से फूऊऊऊ कर उसने चार बत्तियाँ एक झटके में बुझा दी पर दो नहीं बुझ पाई। जिन्हें जल्दी में फूंक मार कर बुझाने के चक्कर में, उसके मुँह से थूक के कई छींटे केक पर बिखर गये जिन्हें परुली आमा साफ-साफ देख पा रही थी मगर नये चल रहे फैशन में यह सब चलता ही है, सोचकर चुप थी। बाद में केक का क्रीम नीलेश के चेहरे पर लोगों द्वारा पतोड़ने के बाद उसे टुकड़ो में काटकर कागज की प्लेटों में टाफी व नमकीन के साथ सभी को खाने के लिए परोसा गया तो परुली आमा केक के ऊपरी परत को अंगुली से साफ करते हुए दिखी। उसे भलीभाँति याद है अपने बच्चों का जनमबार वह बच्चों को नहला धुला ,मंदिर में दीया जला ,टीका लगा, पूरी परसाद बना पूरे परिवार के साथ खाकर मनाती थी। पर जब से इसे हैप्पी बड्डे कहकर मनाने की परम्परा चल पड़ी है तब से हुए बदलावों से आश्चर्य चकित सी है मगर किससे क्या कहे? फैशन ही यही चल रहा है हर जगह अब। (प्रधानाध्यापक, रा आ प्रा विद्यालय उडियारी ,बेरीनाग)

लघु कथा

पुण्य

डॉ.दीपा गोबाड़ी

गंगा स्नान के लिए चित्र और विवेक प्रयाग राज में गंगा तट पर उतरे तो उन्हें ज्ञात हुआ की स्नान हेतु उन्हें कफी पैदल चलना पड़ेगा। भीड़ होने के कारण वहाँ तक बस नहीं जाती थी। भीड़ भाड़ भी काफी थी। एक रिक्शेवाले से बात की तो उसने वहां तक पहुँचाने के 50 रु. लेने की बात कही। चित्र तुरन्त बोली- भैया क्यों लूट मचाते हो। वहाँ तक इतने रुपए नहीं होते हैं। हम तो 30 रु. ही देंगे। चलना है तो चलो, नहीं तो हम दूसरा रिक्शा लेते हैं। रिक्शावाला उम्र दराज था। बोला बैठो बेटा। तीर्थनगरी है। आपको गंगा स्नान के लिए ले जा रहा हूँ। पुण्य का काम है। जो मर्जी दे देना। दोनों रिक्शे में बैठे। सामान कम ही लाए थे सो पीछे रख लिया। सर्द ठण्ड में भी बूढ़ा रिक्शेवाला हांफ रहा था और लगभग पैदल चलते हुए रिक्शे को भीड़ के बीच में से खींच रहा था। अन्ततः वे स्नान वाली जगह पर पहुँचे। जो काफी बड़ा मिट्टी का टीला और मैदान था। रिक्शे वाले को पैसे देते हुए चित्र को उस ठण्ड में भी रिक्शेवाले की कनपटी पर फैली हुई पसीने की बूंदे स्पष्ट दिख रही थी।चारों ओर के वातावरण को देखकर चित्र और विवेक बहुत हर्षित उठे। आसपास छोटी-छोटी दुकान थी। जो फूलमाला, प्रसाद, दिए , सिंदूर, चूड़ी आदि से सजी थी। रेत के ढलान से उतरते ही गंगा नदी के इस तरफ नहाने हेतु रेत के बोरों से आढ सी बना दी गई थी और स्थान स्थान पर नहाने हेतु छोटे छोटे कुण्ड से बनाए गए थे। दोनों ने हाथ पकड़ एक साथ ठण्डे जल में डुबकी लगाई। चित्र ने आते समय नजदीकी दुकान से गंगा में प्रवाहित करने हेतु दीपक ले लिया था। जो गंगा स्नान के बाद उसने दीपक प्रज्वलित कर जल में प्रवाहित कर दिया। वहाँ एक व्यक्ति छोटी बाल्टी में पनीला दूध लिए हुए था। बोला मांजी गंगा मैया में दूध भी चढ़ाते हैं। चित्र ने पूछा कितने का है। वह बोला- 10रुपये का है। चित्र को उसने नीला सफेद दूध दे दिया। जिसे उसने सूर्यदेव को अर्घ्य देते हुए जल अर्पित कर दिया। उसने तीन चार बार उसी में थोड़ा थोड़ा पानी वाले दूध डाला। चित्र को कुछ समझ नहीं आया वह थोड़ा-थोड़ा चढ़ाती रही। विवेक चिल्लाया क्या कर रही हो मत करो और ज्योही चित्र 10रुपये उस व्यक्ति को देने लगी। वह बोला मांजी 50रु. होते हैं। आपने पाँच बार दूध चढ़ाया है। चित्र को अपने ठगे होने का एहसास हो चुका था। उसे विवेक की डांट भी पड़ चुकी थी और 50रु. देने ही पड़े। इस पुण्य कार्य में उसे वापसी में पसीना पोछते रिक्शेवाले का चेहरा बरबस ही याद आ गया।(प्रो.हिन्दी, एम.बी.रा.स्ना.महाविद्यालय, हल्द्वानी)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पटवारी से लेकर जेई-एई तक पेपर घपले की आँच

कॉल डिटेल की जा रही है ताकि घपलेबाज उजागर हो सकें। बहुत समय से अंधेरे मची है

हरिद्वार/देहरादून। प्रदेश में तमाम तरह के पेपर और भर्ती में हुई घपलेबाजियों की जिस प्रकार से कलई खुली है, उसने यह बता दिया है कि वर्षों से अन्याय की चादर ओढ़ी-बिछाई जा रही थी। इन घपलों में वही लोग शामिल रहे जो इसके करने-करवाने वाले थे। पटवारी से लेकर जेई-एई तक के पेपर लीक करवाने में लोक सेवा आयोग के अनुश्रभाग अधिकारी संजीव कुमार से 28 लाख रुपये में सौदे की बात कही जा रही है। संजीव ने 28 लाख में पेपर लेकर दलाल सुनील सैनी व नितिन चौहान के माध्यम से अभ्यर्थियों तक पहुँचाया। पटवारी भर्ती परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक करने में जेल में बन्द आयोग के निलम्बित अनुभाग अधिकारी संजीव चतुर्वेदी की इसमें मुख्य भूमिका रही।

पिछले कुछ महीनों से जिस प्रकार पूरे उत्तराखण्ड में भर्ती, परीक्षा, प्रश्नपत्र जैसे सवालों को लेकर युवा परेशान हैं और शासन-प्रशासन के सामने चुनौती है कि वह सच को सामने लाते हुए युवाओं को न्याय भी दे।

इस समय भर्ती परीक्षा के प्रश्न पत्र लीक की छानबीन में कॉल डिटेल में कई लोगों का राज खुल सकता है। इसमें भाजपा नेता सहित कई नामों की बात कही जा रही है। सफेदपोश और अफसरों की की मिलीभगत का भण्डाफोड़ भी हो जाए तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। असल में जिस प्रकार से हाकिम से लेकर संजीव तक जितने चेहरे उजागर हुए हैं उसे देख चारों ओर सन्देह होने लगता है। घपले-घोटाले में लिप्त अपने को बचाने के लिये सारे प्रयास कर भी रहे होंगे लेकिन इनकी पकड़ तो हो ही जाएगी। असल बात है जो भी पकड़ में आ रहा है उसे तत्काल सजा दे दी जाए। देखते हैं आने वाले दिनों में क्या होगा।

'नशा नहीं रोजगार दो' आन्दोलन की ३९वीं वर्षगांठ

चौखुटिया के बसभीड़ा में हुए आयोजन में जुटे आन्दोलनकारी और सभा की

अल्मोड़ा/द्वाराहाट। 'नशा नहीं रोजगार दो' आन्दोलन की 39वीं वर्षगांठ के अवसर पर तमाम आन्दोलनकारी इस बार भी जुटे और उत्तराखण्ड में हो रही अराजकता को लेकर एक सुर से आक्रोश किया।

चौखुटिया के बसभीड़ा में नशा नहीं रोजगार दो आन्दोलन की 39वीं वर्षगांठ पर नुक्कड़ नाटकों का आयोजन भी किया गया। इस दौरान वक्ताओं ने ने कहा कि प्रदेश में नशे का कारोबार चरम पर है। रोजगार के लिए युवा महानगरों की दौड़ लगाने को मजबूर हैं। उन्होंने कहा कि सरकार को रोजगार को मौलिक अधिकार बनाकर बेरोजगारों को को राहत देनी चाहिये। सभा में बोलते हुए उत्तराखण्ड परिवर्तन पार्टी के केन्द्रीय अध्यक्ष पी.सी. तिवारी ने कहा कि समाज में नशा तेजी से फैल रहा है। युवा नशे की गिरफ्त में समा रहे हैं। इसके बढ़ने की वजह रोजगार का संकट है। ऐसे में सरकार को युवाओं को रोजगार से जोड़ने को लेकर गम्भीरता दिखानी चाहिये। उन्होंने कहा कि प्रदेश में भू माफियाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है। शराब माफियाओं के हौंसले बुलन्द हैं। ऐसे में इस आन्दोलन के जरिए सरकार की आँख खेलने का काम किया जा रहा है।

सभा में हल्द्वानी के निर्मल दर्शन नशा मुक्ति केन्द्र के संकल्प, अमन, कमल अराध्य, रविशंकर ने नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से लोगों को नशे के प्रति जागरूक किया। इस अवसर पर पवन पाण्डे, मोहन चन्द्र, प्रकाश जोशी, कैलाश चन्द्र तिवारी, पूर्व विधायक महेश नेगी सहित कई लोग शामिल थे।

उल्लेखनीय है कि बसभीड़ा का नशा नहीं रोजगार दो आन्दोलन अपनी शुरुआत के बड़े आन्दोलनों में रहा है और उसी संकल्प के साथ वर्तमान तक इसके साथी आवाज उठा रहे हैं।

चिन्ता : सरोवर नगरी की लोअर मालरोड पर फिर दरारें। बलियानाला क्षेत्र की ओर निगारानी

परिक्रमा

नैनीताल। सरोवर नगरी पर खतरों के निशान दिखाई दे रहे हैं। अपर मालरोड पर फिर से पड़ी दरारों ने चिन्ता बढ़ा दी है। बताते चलें कि अक्टूबर 2018 में भू कटाव के कारण इस मार्ग का 25 मीटर को भू-कटाव के चलते क्षतिग्रस्त हो गया था। इसके बाद से लगातार मालरोड के विभिन्न हिस्सों में दरारें पड़ रही हैं। हालांकि लोनिवि समय-समय पर इन दरारों को भरने का काम कर रहा है। इसके स्थायी ट्रीटमेंट पर बातें हुई लेकिन अभी तक कार्य नहीं हो पाया है यह भी चिन्ता की बात है। बताया जा रह है कि विभाग ने डीपीआर शासन को भेजी थी इसमें तकनीकी कमियों के कारण एसडीएमएस ने डीपीआर को वापस लोनिवि को भेजा है। अब डीपीआर दुरुस्त होकर फिर से शासन को भेजी जा रही है।

दूसरी ओर बलियानाले पर आई आपदा के बाद से निगरानी रखी जा रही है। बलियानाले के उपचारात्मक कार्यों के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में जिला कार्यालय में बैठक हुई। डीएम की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में अधिकारियों ने भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियन्ता ए.के.वर्मा और एसडीएम राहुल साह ने बताया कि प्रभावित क्षेत्र के 99 परिवारों के पुनर्वास को बेलवाखान में लगभग 50 नाली भूमि विस्थापितों के लिये चिन्हित की गई है। डीएम ने लोनिवि, आपदा, जलसंस्थान, विद्युत, राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिए कि विस्थापित क्षेत्र में निरीक्षण करने के साथ ही स्कूल के ट्रीटमेंट कार्य का स्टीमेट तैयार करें ताकि फिर से भवन का निर्माण किया जा सके। बैठक में मुख्य शिक्षा अधिकारी, प्रधानाचार्य सीआरएसटी, जीआईसी, जीजी आईसी भी उपस्थित थे।

गौला नदी के किनारे बनेगा रिवर फ्रंट

सिंचाई विभाग ने किया सर्वे शुरु। इसे ऋषिकेश की तर्ज पर विकसित किया जायेगा

हल्द्वानी। गार्गी याने गौला नदी पर अब रिवर फ्रंट बनाने की तैयारी है, इससे पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही गौलापार काठगोदाम टू लेन सड़क बनने से जाम से राहत मिलेगी।

बताया गया है कि ऋषिकेश की तर्ज पर गौला नदी के किनारे रिवर फ्रंट बनना है। काठगोदाम से गौलापार तक आठ किलोमीटर लम्बा रिवर फ्रंट बनाने के लिए सिंचाई विभाग ने सर्वे शुरु कर दिया है। इसके लिये ड्रोन का प्रयोग करने की बात कही गई थी लेकिन सेना शिविर की ओर से इसकी अनुमति नहीं दी गई है। फिलहाल सर्वे तो होना है। रिवर फ्रंट बनने से जहाँ गौला नदी के कटाव से सुरक्षा होगी वहीं लोगों को वैकल्पिक मार्ग भी उपलब्ध हो जायेगा। सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियन्ता के.एस.बिष्ट ने बताया है कि डीएम के निर्देश पर गौला नदी के किनारे काठगोदाम से गौलापार तक रिवर फ्रंट बनाने की योजना है। इसे ऋषिकेश की तर्ज पर विकसित किया जाएगा। सर्वे कार्य जारी है। दरअसल गौला नदी शहर की ओर लगातार कटाव कर रही है। बाढ़ की स्थिति में रेलवे ट्रेक और नदी किनारे सरकारी सम्पत्तियों को नुकसान की सम्भावना है। इसे देखते हुए काठगोदाम गौलापुल से गौलापार बाईपास स्थित गौलापुल तक नदी के किनारे रिवर फ्रंट बनाने की योजना है। नदी किनारे टू लेन सड़क भी बनाई जाएगी। इससे रेलवे के साथ ही सरकारी सम्पत्तियों की भी सुरक्षा होगी और वैकल्पिक मार्ग मिल जाएगा। जिलाधिकारी ने सिंचाई विभाग को आगणन बनाने के निर्देश दिए हैं।इसमें राज्य आपदा न्यूनीकरण निधि से बजट मिलना है। यह तो तय है कि रिवर फ्रंट बनने से क्षेत्र की सुन्दरता बढ़ने के साथ ही पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और जाम से निजात मिलेगी।

डीडीए के विरोध में सर्वदलीय समिति का प्रदर्शन

गांधी पार्क में धरना। ग्राम प्रधान संगठन की ओर से तालाबंदी और ज्ञापन भेजा गया।

अल्मोड़ा। जिला विकास प्राधिकरण के विरोध में सर्वदलीय समिति ने गांधी पार्क में धरना दिया। इस अवसर पर समिति के पदाधिकारियों ने सरकार पर जनता की अनदेखी का आरोप लगाते हुए शीघ्र डीडीए के निर्णय को वापस न लेने पर उग्र आन्दोलन की चेतावनी दी है।

गांधी पार्क में आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुए पूर्व कांग्रेस जिला प्रवक्ता राजीव कर्नाटक ने कहा कि जिला विकास प्राधिकरण को समाप्त करने की मांग को लेकर सर्वदलीय संघर्ष समिति के धरने को 5 साल से अधिक का समय हो गया है लेकिन प्रदेश सरकार अभी तक इस मामले में चुप्पी बैठी है। उन्होंने कहा कि 5 साल पूर्व नवम्बर 2017 में प्रदेश सरकार ने अव्यवहारिक तरीके से अल्मोड़ा सहित पूरे पर्वतीय क्षेत्र में पाधिकरण लागू कर दिया था। जिसके विरोध में नवम्बर 2017 में सर्वदलीय संघर्ष समिति का गठन किया गया था, तभी से लगातार समिति जिला स्तरीय विकास प्राधिकरण को समाप्त करने की मांग को लेकर आन्दोलन कर रह है।

समिति के धरने में चन्द्रकान्त जोशी, ललित मोहन पन्त, राजू गिरी, प्रताप सिंह सत्याल, तारा चन्द्र साह, एम.सी. काण्डपाल शामिल थे।

दूसरी ओर विभिन्न मांगों को लेकर ग्राम प्रधान संगठन का धरना प्रदर्शन हुआ। संगठन ने जिले के सभी विकास खण्डों में तालाबन्दी करते हुए उनकी मांग पूरी करने को कहा। संगठन के अध्यक्ष प्रेम सिंह रावत ने कहा कि ग्राम प्रधान मनरेगा, केन्द्रीय व राज्य वित्त में आ रही समस्याओं के निदान के लिये सरकार से कई बार गुहार लगा चुका हैं लेकिन सरकर ग्राम प्रधानों और आम जनता की उपेक्षा कर रही है। संगठन ने जिलाधिकारी के माध्यम से शासन को ज्ञापन भेजा है। इस मौके पर हरीश बौड़ाई, रमेश चन्द्र, प्रकाश चन्द्र, राम सिंह थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बज्यूठिया (रामगढ़) में फसल सुरक्षा के कार्य

नैनीताल जिले के रामगढ़ में बज्यूठिया ग्राम का तीन चौथाई भौगौलिक क्षेत्र जंगल से घिरा है। यहाँ के किसान कृषि पर निर्भर है, विगत कई वर्षों से क्षेत्र में सूअर, साही एवं अन्य जंगली पशुओं की वजह से फसलों को काफी नुकसान हो रहा था, जिससे खषकों की फसल नष्ट हो जाती थी एवं उन्हें खेतों से अपेक्षित लाभ नहीं मिल पा रहा था जिससे किसानों ने खेती से अपना रूझान धीरे-धीरे कम कर लिया था एवं नुकसान की वजह से यहाँ से किसान मजदूरी करने के लिए विवश हो रहे थे।

जानकारी देते हुए युवा मुख्य विकास अधिकारी डा. संदीप तिवारी ने बताया कि ग्राम पंचायत बज्यूठिया विकासखण्ड मुख्यालय रामगढ़ से 13 किमी की दूरी पर है। रोड हैड से लगभग 1500 मी0 पैदल मार्ग है। ग्राम पंचायत की लगभग 22.2 है0 कृषि योग्य भूमि को जंगली पशुओं से नुकसान हो रहा था जिसमें सुरक्षा हेतु परियोजना के उद्देश्य से ग्रामवासियों को अवगत कराते हुए परियोजना का चयन किया जिसमें ग्रामवासियों द्वारा सहमति प्रदान की गयी। मुख्य चुनौती रोड हैड से परियोजना स्थल तक सामग्री की आपूर्ति कराना एवं कार्य को पूर्ण कराना था। जिससे किसानों के होने वाले नुकसान को कम किया जा सके।

डा. तिवारी बताते हैं कि राष्ट्रीय खषि विकास योजना के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2015-16 में परियोजना बज्यूठिया का चयन फसल सुरक्षा हेतु घेरबाड़ हेतु किया गया एवं सम्बन्धित परियोजना प्रभारी के माधयम से कार्य को पूर्ण कराया गया।

उन्होंने बताया कि घेरबाड़ निर्माण होने के उपरान्त ग्रामवासियों ने अपनी फसल चक्र में परिवर्तन कर नगदी फसलें बोना शुरू कर दिया। अब वह सब्जी (मुख्यत: मटर, टमाटर, फूलगोभी, फरासबीन, शिमला मिर्च) का उत्पादन कर अपनी आय में निरन्तर वृद्धि कर रहे है एवं उनका उत्पाद स्थानीय बाजार जैसे गरमपानी, भवाली एवं हल्द्वानी मण्डी तक भेजा जाता है जिससे उनके उत्पाद का उन्हें अच्छा दाम मिल जाता है।

ग्रामवासियों के द्वारा सुरक्षा हेतु घेरबाड़ से योजना को कारगार बताया गया है एवं जंगली पशुओं से नुकसान न होने की वजह से उनके उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हो रही है। युवा सीडीओ की इस सकारात्मक पहल का स्थानीय काश्तकारों ने स्वागत किया हैं। इससे उनके आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई हैं।

संकलन एवं प्रस्तुति - मीडिया सेन्टर हल्द्वानी सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग

प्रतिमा देवी जंगपांगी को श्रद्धांजलि

हल्द्वानी/मुनस्यारी। प्रतिष्ठत व्यापारी स्व. सीताराम सिंह जंगपांगी की पत्नी 90 वर्षीय श्रीमती प्रतिमा देवी जंगपांगी का निधन हो गया है। प्रतिमा देवी अपने पीछे पुत्र लक्ष्मण सिंह, भूपेन्द्र सिंह, डॉ. एस.बी.सिंह सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। इनके एक पुत्र व्यवसायी बाला सिंह का पहले निधन हो चुका है। इनकी ज्येष्ठ बहू पिघलता हिमालय के संस्थापक स्व. दुर्गासिंह मर्तोलिया की सुपुत्र डाक्टर उषा जंगपांगी हैं। प्रतिमा देवी कुछ समय से अस्वस्थ्य थीं और बहू डाक्टर उषा की देखरेख में हल्द्वानी में ही थी।

प्रतिमा देवी अपनी पुरानी यादों के साथ पिघलता हिमायल परिवार से आजीवन जुड़ी रहीं। उनके निधन पर पिघलता हिमालय परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

बनभूलपुरा निशाने...

प्रथम पृष्ठ का शेष

कि विरोध का रास्ता आसान होगा लेकिन जब पुलिस और प्रशासन ने सख्ती की तो क्षेत्र में खलबली मच गई। चूंकि कमिश्नर के नेतृत्व में कार्रवाई करने बनभूलपुरा गई टीम को प्रदर्शनकारियों ने घेर लिया और हंगामा मचाया। ऐसे में 200 लोगों पर मुकदमा दर्ज करने के अलावा ताबड़तोड़ कार्रवाई अमल में लाई गई। नगरनिगम और प्राधिकरण की टीम ने पहले दस पक्के अवैध मकान तोड़े और एक निर्माणाधीन मकान को ध्वस्त किया। भारी पुलिस बल के साथ चल रही कार्रवाई में यह भी पता चला कि लाइन नम्बर8 और लाइन नं. 12 में बेसमेंट बनाकर अवैध खुदान और हजारों क्विंटल उपखनिज निकासी हुई है। इसकी पकड़ होते ही खान विभाग और राजस्वा विभाग ने जुर्माना लगाया गया है।

निकाय और पंचायत चुनाव के लिये जुटे आप ने सभी सीटों पर लड़ने का ऐलान किया

निकाय और पंचायत चुनाव को लेकर राजनीतिक पार्टियों की तैयारियां दिखाई दे रही हैं। भाजपा, कांग्रेस, आम आदमी पार्टी के अलावा उत्तराखण्ड क्रान्ति दल अपने प्रभाव वाले क्षेत्रों में सक्रिय हैं। स्थानीय चुनाव जानते हुए अधिकांश निर्दलीय के रूप में भी तैयारी पर जुट चुके हैं।

तैयारियों के हिसाब से देखें तो भाजपा संगठन सबसे आगे दिखाई दे रहा है। अपने बड़े पार्टी संगठन के साथ उसके नेता लगातार सम्पर्क कर बूथ स्तर तक घेराबन्दी में जुट चुके हैं। संगठन की रणीनति के अनुसार इनकी तैनाती हो चुकी है। नैनीताल विधानसभा के चारों मण्डल अध्यक्ष, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य सहित प्रभारियों का स्वागत समारोह आयोजित किया गया। विधायक सरिता ने कहा कि आगामी निकाय व पंचायत चुनाव की तैयारियों में अभी से जुट जाएं।

नैनीताल राज्य अतिथि गृह में आम आदमी पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष शिशुपाल सिंह रावत व प्रदेश संगठन सचिव हेम आर्य के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं की बैठक हुई जिसमें तय किया गया कि निकाय के सभी सीटों पर पार्टी चुनाव लड़ेगी। आप में अन्दरूनी घमासान मची है परन्तु प्रदेश में तीसरी ताकत के रूप में तो वह नाम कमा ही चुकी इसलिये कई प्रभावशाली नेता आप से जुड़े हुए हैं और पंचायत व निकाय चुनाव के गणित के लिये इनकी भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी।

कांग्रेस की ओर से भी चुनाव की तैयारी है। पार्टी स्तर पर संगठन की बैठकों के अलावा रणनीति बनाई जा रही है लेकिन जैसा कि पहले भी देखा गया है कि निकाय व पंचायत चुनाव में वह टिकट न देकर समर्थन के भाव में रहती है, वही इस बार भी है। ऐसे में जो इनके पक्ष का होता है वह मान लिया जाता है।

उत्तराखण्ड क्रान्ति दल प्रदेश का स्थापित स्थानीय दल है और वह इन चुनाव के लिये अपनी तैयारी कर रहा है। इस बीच यूकेडी द्वारा जगह-जगह सम्पर्क अभियान व प्रदर्शन भी तेज हुए हैं।

प्रोमिला बृजवाल को श्रद्धांजलि

हल्द्वानी। समाजिक सरोकारों से जुड़ा बलवन्त कालोनी के बृजवाल परिवार को बड़ा आघात उस समय लगा जब श्रीमती प्रोमिला बृजवाल का निधन हुआ। श्री प्रेम सिंह वृजवाल की पत्नी श्रीमती प्रोमिला (पम्मी) बृजवाल ने अस्वस्थ्य होने के बाद विगत दिवस इस लोक से विदा ली।

स्व.प्रोमिला का स्मरण करते हुए सभी ने शोक सम्वेदनाएं प्रकट की हैं। अचानक इस प्रकार से उनका जाना परिवार के साथ इष्ट-मित्र-समाज को दु:ख दे गया है। स्व. प्रोमिला बृजवाल के निधन पर पिघलता हिमालय परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

बसन्त पंचमी एवं शिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं-

हिमांशु आगरी
हेमू रेडिमेट एण्ड कॉस्मेटिक
राईआगर बाजार
बेरीनाग

गोपाल सिंह मर्तोलिया
जनरल स्टोर, दोनहरिया
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

गंगा सिंह मर्तोलिया
जीवनपुरम्
विठौरिया नं. 1, हल्द्वानी

कवीन्द्र सिंह बृजवाल
हार्डवेयर दुकान
मुख्य बाजार
मुनस्यारी

होटल माँ नन्दादेवी
एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया
एण्ड सन्स
मुनस्यारी
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

सप्ताह के पर्व

माघ कृष्ण पक्ष
13 फरवरी- संक्रान्ति
15 फरवरी- महर्षि दयानन्द जयन्ती
16 फरवरी- एकादशी
18 फरवरी- महाशिवरात्रि

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi
Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)